International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-08-2020; Accepted: 10-09-2020; Published: 26-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 46-49

मंगलेश डबराल की कविताओं में संवेदना

Mangla
Assistant Professor, Chandrawati Tiwari girls PG College Kashipur, Uttarakhand, India

प्रस्तावना

मंगलेश डबराल का जन्म 16 मई 1948 में टिहरी गढ़वाल के काफलपानी गांव में हुआ। उनकी माता का नाम सत्येश्वरी देवी एवं पिता का नाम श्री मिश्रानंद जी था। परिवार में दादा-दादी, माता-पिता, के अलावा पांच बहने थी। प्रारंभ से ही उनके परिवार में संगीत, ज्योतिष एवं वैद्य का वातावरण था। जिससे मंगलेश डबराल प्रभावित हुए। मंगलेश डबराल बचपन से ही एक मेधावी छात्र थे। मंगलेश डबराल ने हाईस्कूल की पढ़ाई चम्बा एवं टिहरी नामक कस्बे के विद्यालय से की। देहरादून के डी.ए.वी. कॉलेज में उन्होंने बी.ए में प्रवेश लिया। मंगलेश जी को बचपन से ही साहित्य में रूचि थी। अपने विद्यालय जीवन में उन्होंने 'कामायनी', प्रियप्रवास' और 'आसू' का अध्ययन कर लिया था। बचपन से ही गणित में उनकी तनिक भी रूचि नहीं थी। अंग्रेजी एवं हिन्दी विषय में रूचि एवं पकड़ मजबूत थी। सन् 1970 में वे नौकरी की तलाश में दिल्ली जाने के बाद उनके जीवन में नया मोड़ आया। कई पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य करते हुए निरंतर साहित्य सेवा में लगे रहे हिन्दी जगत में अनका और उनकी रचनाओं का एक अलग महत्व है। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं- 'पहाड़ पर लालटेन' (1981), 'घर का रास्ता' (1988), 'हम जो देखते हैं' (1995), 'आवाज भी एक जगह है' (2000), 'नये युग शत्रु' (2013) (काव्य संग्रह), 'एक बार आयोवा' (1996), 'लेखक की रोटी' (1997) 'कवि का अकेलापन' (2008) इनकी गद्य रचनाएं हैं।

मंगलेश डबराल की काव्ययात्रा मुख्य रूप से सामाजिक विसंगतियों से ही शुरू होती है। इसमें साधारण जनता के दुख दर्द, बेचैनी, पूंजीवादी विसंगतियों, निम्न तथा मध्यमवर्गीय जीवन की तमाम सच्चाईयां आदि आते हैं, उन्होंने उन विसंगतियों पर घातक प्रहार तथा समाज सुधार का सार्थक प्रयास भी किया है। सन् 1960 के बाद उभरने वाली पीढ़ी में मंगलेश एक ऐसे युवा कवि हैं, जिनके यहां अपने समय के आम डगर से हटकर अभिव्यक्ति की नैतिकता धीरे-धीरे विकसित होती दिखाई दे रही है। उनकी अधिकांश रचनाएं छोटी-छोटी सच्चाईयां हैं, उनकी रचानाएं अनुभव पर आधारित होने के कारण इनमें जीवंतता झलकती हैं। उन्होंने जीवन के अनुभवों को ही कटु सत्य और निर्दयता के साथ निर्भय होकर समाज की व्यवस्था का चित्रण किया है। उनके संग्रह की अनेक कविताएं समाज पर आधारित हैं

मंगलेश डबराल की कविताएं समाज के अतर्विरोधों को उघाड़ते हुए समाज की भीतर की अमानवीय शक्तियों की पहचान कराने के साथ-साथ उसका प्रतिरोध भी करने की क्षमता रखती है, साथ ही साथ नये मानव समाज व राष्ट्र की कल्पना करती है। मंगलेश वर्तमान शोषण व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं मंगलेश डबराल आज की सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण बेधड़क करते हैं। मंगलेश डबराल समाज में जो अन्याय कुण्ठा शोषण हिंसात्मक कृत्य बाजारवाद आदि का चित्रण यथावत् हमारे सामने रखने में थोड़ा भी हिचकिचाते नहीं। हम एक नहीं अनेक हैं ये नारा हर तरफ प्रतिध्वनित हो रहा है। आज समाज का रूप बदल चुका है, जीवन में मुश्किले बहुत हैं, जिसमें जीना आम जनता के लिए बहुत कठिन हो गया है। पूरी दुनिया में बाजारवाद हावी है, जहां ना मनुष्य का सम्मान है न उसके रिश्तों का। इन बातों पर मंगलेश डबराल खेद प्रकृट करते हैं। ऐसी पस्थितियों पर चिंतन मनन करते हुए समस्या का समाधान ढूढ़ने का प्रयत्न करते हैं। और समाज को जगाने का प्रयत्न भी करते हैं। समाज में एक अच्छे साहित्यकार की जरूरत होती है। साहित्य की रचना प्रक्रिया में समाज और व्यक्ति का अभिन्न संबन्ध है, साहित्य की पूर्ण सामग्री समाज देता है, जागरूक कवि अपने समाज की यथार्थ स्थिति से दूर भागता नहीं है, संपूर्णतया ना सही थोड़ा ना थोड़ा समाज का चित्रण अपनी कृति में खींचना चाहता है। साहित्य समाज के अनेक महत्पूर्ण दायित्वों को लेकर चलता है।

समकालीन कविता हमेशा अपने समय को साथ लेकर चलती है, समय के साथ-साथ समाज और समाज में व्यक्ति सत्ता अनिवार्य है मंगलेश डबराल ने जो देखा उसे यथावत प्रकृट किया। स्वाभाविकता जहां है, सच्चाई अपने आप सामने आ जाती है। मंगलेश जी कहते हैं कि- "हमें एक राष्ट्र की नहीं, एक समाज की एक अच्छे समाज की जरूरत हैं।"1

मंगलेश डबराल की आंखे समाज के इर्द-गिर्द घूमती हैं, जो समाज को उन्होंने देखा उसी समाज के विभिन्न वर्गों के अपनी कविताओं में व्यक्त किया। उच्च वर्ग, मध्य वर्ग , निम्न वर्ग तीनों को चित्रित किया है, उच्च वर्ग में जमींदार और नेता शोषक हैं, जो अनेक प्रकार से लोगों का शोषण करते हैं, वे मजबूर लाचार लोगों का फायदा उठाकर अपना काम कर लेते हैं, दूसरी मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग किसान और मजदूरों का हैं इनका जीवन तो कष्ट से भरा है, और वे जीन्दगी भर परिश्रम करते रहते हैं। मंगलेश डबराल ने इनका यथार्थ वर्णन किया है। किसी जगह अन्याय हो रहा है, मंगलेश डबराल चुप बैठने वालों में से नहीं हैं। वे मजदूर किसानों के दुख दर्द की कहानी ही नहीं सुनाते, वे समाज की प्रथाओं परम्पराओं समाज की सभी बुराईयों

को देखकर, सुनकर चुपचाप नहीं बैठते उन्होंने इन सब का स्पष्ट रूप उभारा है, उनकी रचनाओं में दर्द छिपा हुआ है, आम आदमी का जीवन संघर्ष की भट्टी में तपता गलता सा दिखाई देता है। मंगलेश डबराल जमीन से जुड़े हुए कवि हैं, वे गांव की समाज की और देश की रोजमर्रा की समस्याओं से भलि-भांति परिचित हैं, इसलिए उनकी कविता यथार्थ और मौलिक है। मंगलेश डबराल के काव्य में यथार्थता, नारीवादी स्वर, जीवन के प्रति आस्था, शोषण का विरोध आदि की संवेदना के प्रमुख मुखरित हुई है।

मंगलेश की कविताओं की मुख्य विशेषता यथार्थ का वह पहलू है, जो उनके पहाड़ के परिवेश से भिन्न हैं लेकिन एक दृष्टि से उसे उसी का विस्तार कहा जा सकता है। पहाड़ से भिन्न परिवेश जिनमें शहर, महानगर और जीवन के दूसरे कई पक्ष शामिल हैं, उनकी कविताओं का महत्पूर्ण संसार हैं। इसमें कवि की संवेदना और दृष्टि दोनों का विस्तार दिया है। ध्यान देने की बात यह है कि मंगलेश ने यद्यपि उग्र तेवर की कविताएं भी लिखी है, लेकिन उनमें भी अन्य कविताओं के मुकाबले यथार्थता का स्वर अधिक संयत है। क्योंकि उनकी मूल प्रकृति जीवन के दैनंदिन यथार्थ से उपजी संवेदनाओं को व्यक्त करने की ओर हैं, इसलिए मंगलेश के लिए उन कमजोरियों से बचना ज्यादा आसान भी था।

संगीत के विभिनन कलाकारों का यथार्थ चित्रण इनकी कविताओं की विशेषता है। आमिर खा, केशव अनुरागी, वह गाता हुआ लड़का, संगतकार जैसे कलाकारों की त्रासदी की गाथा रची गयी हैं। नाजियाबाद आकाशवाणी केन्द्र पर प्रोड्यूसर की नौकरी करते हुए गुमनाम मौन के शिकार ढ़ोल सागर के अकेले वादक केशव अनुरागी की कलाकार जिन्दगी की त्रासदी का जितना मार्मिक और त्रासद रूपांतरण इस कविता में किया गया है, वो तथ्य बताने के लिए काफी है, कि कैसे सरकार तंत्र में प्रतिभाएं टूटकर गुमनाम दम तोड़ देती है- "एक दिन वह मनुष्य और देवताओं के ढ़ोल से बाहर निकल गया, वह रहता है मृत्यु ढ़ोल के भीतर"[2]

केशव अनुरागी की परम्परा में दिल्ली की बसों में गाता हुआ वह लड़का है, जिसके सुरीले गीतों के दाम महज दो रोटियां हैं, पर वह भी नसीब नहीं। कवि इस गायक बच्चे की त्रासदी को इस देश में कलाकार की नियति मानता है और यथार्थता को सामने लाने का प्रयत्न करता है।

"वह गया हुआ ओझल
रास्ते भर रही मेरे साथ ही मिठी धुन
इस तरह महज एक रूपये में मिली मुझे कविता
घर जाकर मैंने वह धुन गायी मन में
और रो पड़ा
कितना रहा अकरथ मेरा रोना
कैसा विचित्र रात में ये रोना"[3]

इस तरह मंगलेश की कविताओं में यथार्थता की सच्चाई की आवाज है, मंगलेश ने अपने चौथे कविता संग्रह 'आवाज भी एक जगह है' में कवि ने अपनी कविता की आवाज के लिए एक नया स्थान ढूढ़ा है। 'अपनी छायाएं' कविता में वे लिखते हैं-

"उसकी कविताओं में उनकी आवाजे हैं
जिनकी कोई आवाजे नहीं थी
उसकी कविताएं मचाती रही
एक महा संघर्ष का कोहराम
सर पर आसमान उठाए हुए वे चलती ही रही
अब वह सुन नहीं पाता बाहरी दुनिया की आवाज
उसकी कविता के लोग
थके हारे आधे रास्ते में गिरे
उसके भीतर पानी की तरह हलचल करते रहते हैं"[4]

इसका मतलब है कि मंगलेश की कविताएं अपने सरोकारों में अब उनकी आवाज में शामिल हो गई हैं जो दीन हीन प्रताड़ित और शोषित हैं। अब तक कविता में दूर अपने समाज में उनकी कोई आवाज नहीं थी। कवि की चेतना ही नहीं समाज के प्रति उसकी प्रतिबद्धता भी स्पष्ट हो रही है। कहना न होगा कि यह ना केवल उनके काव्य कुशलता की नई ऊंचाई है बल्कि कविता में संपूर्ण यथार्थ का अभिव्यक्ति भी है।

मंगलेश डबराल में स्त्री जाति के प्रति गहरी आस्था है, वे उनके भीतर छिपी हुई दुखों को बहुत करूणा की आवाज में पुकारते हैं, 'स्त्रियां', 'तारे के प्रकाश की तरह', 'तुम्हारे भीतर', 'लड़की' और 'अंधा आदमी' ऐसी कविताएं हैं, जिनमें भारतीय स्त्री के संघर्ष भरी कहानी तथा उसकी जीवन शक्ति को पकड़ने की सार्थक प्रयत्न किया गया है। 'स्त्रियां' कविता तो बेजोड़ कविता है, जिसमें स्त्री का दुख, उसका संघर्ष, उसका प्रेम, त्याग, जो आत्मदान की हद तक व्यंजित होता है, भारतीय पुरूष प्रधान सामाजिक संरचना में नारी को भोग्या बनाकर सूचिता का आदर्श रखकर पतिवृत्य धर्म का उपदेश देकर समाज ने उसे खूब छला है, इस कविता में जीवन में बार-बार छली जाने के बावजूद भी वे स्त्री प्रेम से बसा हुआ घर चाहती है।

"एक आंख से हंसती एक आंख से रोती हुई
वो फिर से आ पहंचती है पुरूष के सामने
जैसा उसका कुछ न छिना गया हो
जैसे वो उसी तरह करती आ रही हो प्रेम"[5]

मंगलेश डबराल 'तारे के प्रकाश की तरह' कविता में स्त्री देह को लेकर घर की परिकल्पना कैसे करते हैं देखिए-

"स्त्री की देह उसका घर हैं
वो बिखरी हुई चीजों को सहेजती हैं
तस्वीरों और दिवारों की धूल साफ करती हैं
कपड़े तह कर रख देती हैं
वो अपने भीतर थामें रहती है टूटते पहाड़

बिखरती नदियों और ढहते सौर मंडलों को
वह कुछ कहती है सर झुकाये हंसती है
या उसके आंसू कुछ देर फर्स पर चमकते हैं
ये सब उदाहरण है कि वह किस तरह बचाने में जूटी हैं"[6]

यहां पर मंगलेश ने औरत के आंतरिक दर्द को पहचाना है, उसका बिखरा हुआ घर, बहता हुआ नल और खाये बिना खाना खत्म होना। 'प्रेम करती स्त्री' कविता में इस तरह उभारा है-

"प्रेम करती स्त्री उगी जाती है रोज
उसे पता नहीं चलता बाहर क्या हो रहा है
कौन ठग रहा है
कौन हैं खलनायक
पता नहीं चलता कहां से शुरू हुई कहानी"[7]

मंगलेश का नारी संबंधित दृष्टिकोण प्रगतिशील कवियों की नारी दृष्टि से मिलता है, वह नारी के लिए भारतीय संस्कृति से पृथ्वी का मिथ लेता है, जिसमें उसे 'क्षमयाधरित्री' या 'सर्वदा' कहा गया है। वह नैतिकता मर्यादा और सामाजिकता के बोझ से दबी हुई पुरूषों के अत्याचार को चुपपी के साथ रहने को अभिशप्त है। वे नारी को संस्कृति तक ले जाकर अपनी ओर से कुछ नहीं कहते लेकिन नारी की दयनीय स्थिति से सवाल स्वत: उभरते हैं, 'संरचना' कविता का उदाहरण देखिए-

"मैं कहना चाहता था तुम पृथ्वी हो
तुम में शुरू होता है जीवन
तुम में खत्म उसने कहा मुझे मालूम है भविष्य
मैं रोज देखती हूं अपने हाथ-पैर
जहां से चढ़कर आता है अंधकार"[8]

मंगलेश डबराल स्त्रियों को हवा, पानी जैसे जीवन तत्वों की तरह महसूस करते हैं, स्वयं मंगलेश डबराल कहते हैं कि- "अगर मुझ में गुण हैं तो उससे ज्यादा कुछ मुझे स्त्रियों से मिले और मैं खुद को भीतर से आधा स्त्री महसूस करता हूं और कभी-कभी सोचता हूं कि अगर मैं बाकई स्त्री होता तो इस संसार को प्रेम की कोमलता और जगमगाहट से भर देता।"

इसके साथ-साथ मुझे हमारे राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अबदुल कलाम जी का कथन भी यहां समीचीन है वे नारी के बारे वे कहते हैं कि- "जब महिलाओं को अधिकार प्राप्त होंगे तब एक स्थिर समाज उभरेगा।"9

मंगलेश ने अपनी कविता में अपने समय के जंगल में काम करने वाली स्त्रियों की बुरी अवस्था पर शोक प्रकट किया और उनके क्रंदन से पाषाण हृदय भी पिघल जाता है। उन्होंने अपने मार्मिक विचारों को प्रस्तुत कर स्त्री विमर्श की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने नारी को शोषित उपेक्षित, सामाजिक रूप से अनेक स्थलों पर घृणित और लांछित दशा देखकर उससे सामाजिक पक्षों के विकास की अनिवार्यता जताने का प्रयत्न किया है। मंगलेश ने नारी को शक्ति का रूप माना है और साहित्य के माध्यम से उनमें नवीन चेतना ओज स्फूर्ति और शक्ति का संचार करने का प्रयत्न किया।

मंगलेश डबराल की दृष्टि में जीवन के प्रति गहरी आस्था इंसान कों गर्त में गिरने से बचाती है। मंगलेश डबराल जीवन को संपूर्ण गहराई के साथ अपनाते हैं, इसलिए उनके पहले काव्य संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' से लेकर 'लेखक की रोटी' तक में जीवन का विस्तार मिलता है। उन्होंने जो देखा और भोगा उसी को अभिव्यक्त किया है। मंगलेश की रचनाएं अनुभवों के आधारित हैं। मंगलेश ने कई कविताओं में आदमी की भीतरी बाहरी निराशा समझौता और संघर्ष के बावजूद जो इच्छाओं सपनो और उम्मीदों से भरा जीवन जो जीवन के प्रति गहरी आस्था उत्पन्न करते हैं, उसके बारे में कहते हैं-

बाहर एक बासुरी सुनाई देती है
एक और बांसुरी हैं
जो तुम्हारे भीतर बजती हैं
और सुनाई नहीं देती
एक दिन वह चुप हो जाती है
तब सुनाई देता है उसका विलाप
उसके छेदों से गिरती है राख।"[10]

समकालीन कविता में समसामयिक मानव चेतना पर दबाव पड़ने के कारण आस्था, अनास्था अनेक रूपों में स्थापित होती है। कभी-कभी इन दबावों के कारण ही, विसंगतियों के कारण ही व्यक्ति के मन में अनास्था अपने आप जाग्रत होती है। कभी-कभी जीवन के प्रति आस्थावादी स्वर भी जाग्रत होता है, कवि मंगलेश डबराल अनेक संघर्षों का सामना करते हुए संघर्ष रूपी पाटों के बीच पिसते हुए भी कभी हार नहीं मानते। वे जीवन के प्रति आस्था रखकर ही आगे बढ़ना चाहते हैं-

"मैं अपनी उदासी के लिए
क्षमा नहीं मांगना चाहता था
मैं नहीं चाहता था मामूली
इच्छाओं को चेहरे पर ले आना
मैं भूल नहीं जाना चाहता था
अपने घर का रास्ता"[11]

इस प्रकार मंगलेश डबराल की कविताएं एक नई उम्मीद नये विश्वास, नयी उमंग, नयी आस्था और नयी जिजीविषा के साथ पाठकों को उद्वेलित करती हुई सामने आती है। जीवन के प्रति जिजीविषा भाव मंगलेश में वर्तमान है, ध्वस्त नैतिक मूल्यों व आस्थाओं के बीच राह निकालने का अपने पथ के निमार्ण का संकल्प यहां हम देख सकते हैं, यह संकल्प ही मनुष्य को महान बनाता है।

कवि मंगलेश डबराल शोषित पीड़ित व्यक्ति की व्यथा अपनी कविता में प्रकट करते हैं। पहाड़ पर लालटेन इसमें लालटेन संघर्ष का प्रतीक

है, कवि ने शोषक के खिलाफ लड़ने की चेतावनी दी है। कवि मंगलेश चाहते हैं कि देश की उन्नति के लिए शोषण का खुलकर विरोध करना चाहिए। मंगलेश डबराल ने लालटेन के माध्यम से लोगों के मन में मुक्ति और संघर्ष के बीज बोना चाहा है। उसके प्रकाश से शोषण रूपी घोर अंधकार हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहते हैं। एक वक्त की रोटी के लिए स्त्रियां अपनी कीमती गहने गिरवी रखती है, घर के अन्य सदस्य जो बुजुर्ग हैं वे खेत या जमीन गिरवी रखते हैं, भूख के कारण महामारी फैल गई है, कवि शोषित पीड़ित व्यक्ति की व्यथा कविता के द्वारा प्रकट करते हैं-

"दूर एक लालटेन जलती है पहाड़ पर
एक तेज आंख की तरह
टिमटिमाती धीरे-धीरे आग बनती हुई
देखों अपने गिरवी रखे हुए खेत
बिलखती स्त्रियों के उतारे गये गहने
देखों भूख से, बाढ़ से, महामारी से मरे हुए
सारे लोग उभर आये हैं चट्टानों पर"[12]

इन पंक्तियों में पहाड़ी इलाकों के जन-जीवन उन पर होने वाले अत्याचार, उनके मन में उपजी संघर्ष चेतना आदि का कलात्मक ढ़ग से सृजन हुआ है। इस कविता संग्रह में मध्यम वर्ग की बेबसी, जटिलता, अभाव आदि के साथ-साथ पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले लोगों पर जो शोषण चल रहा है उसका जीवंत चित्रण किया है। जंगल में रहने वाली स्त्रियां लकड़ी का बोझ ढोकर मर रही है, बच्चे बिना भोजन के मर रहें हैं, पेड़ों की कटौती लगातार होती रहती है। व्यापार चलता रहता है, व्यापारी उन असहाय, बेबस, लाचार, मजबूर लोगों को डराकर-धमकाकर पेड़ कटवाते हैं, ऐसा शोषण हर तरफ हो रहा है। शोषितों की आवाज दूर-दूर तक सुनाई देती हैं। उन लोगों के सामने निराशा और भूख के सिवाय कुछ भी नहीं है।

"धूप मे तपती हुई चट्टानों के पीछे
वर्षों के आर्तनाद हैं
और थोड़ी घास है
बहुत प्राचीन पानी में हिलती हुई
अगले मौसम के जबड़े तक पहुंचते पेड़
रातों रात नंगे होते हैं"[13]

मंगलेश डबराल अन्याय के विरूद्ध प्रतिशोध की आवाज बनकर खड़ी हैं लेकिन यह आवाज उग्र और आक्रामक नहीं है, बल्कि इसका स्वर शांत और धीमे किन्तु देर तक गूंजता रहता है। मंगलेश शोषण और अन्याय से ऊपर उठकर नये मानव को जीवन देने की चेष्टा करते हैं, इस तरह मंगलेश अपनी कविता के माध्यम से स्वस्थ और सुन्दर सहज जीवन का भोग करने का आह्वान भी करते हैं।

मध्यमवर्गीय जीवन से समाहित अतर्विरोधों को कवि ने तीव्रता के साथ महसूस किया है। कहीं-कहीं इस वर्ग को अपनी सीमाओं से ऊपर ले जाकर शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की शक्तियों से जोड़ने की कल्पना करते हैं। 'चिड़िया' शीर्षक कविता में कवि शोषित व्यक्ति के संघर्ष की ओर संकेत करते हुए कहते हैं-

"खून की खामोशी को छोड़ती हुई
एक छटपटाहट है जिसके पार
चिड़िया घूमती दिखती है।"[14]

निष्कर्षत

कहा जा सकता है कि सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रिया की चपेट में आ कर कुचल दिए गये लोगों की सम्मान और गौरव का एहसास कराने वाली इन कविताओं में मंगलेश डबराल का सर्वाधिक सार्थक कवि कर्म प्रकट हुआ है। जमीन से जुड़े हुए कवि गांव की समाज की देश की रोजमर्रा समस्याओं से भली-भांति परिचित हैं, मंगलेश की कविता यथार्थ है, मौलिक है, सहज है और जनजीवन से जुड़ी है। मंगलेश डबराल ने अपनी कविताओं में स्त्री की संवेदनाओं और उसकी समाज में स्थिति का बड़ा ही सजीव चित्रण अपनी कविता के माध्यम से जन-जीवन तक पहुंचाया है। और समाज से जुड़ी बुराइयों का विरोध किया है। और अपनी कविताओं के माध्यम से उन सब पर प्रहार किया है। कविता लेखन में पांडित्य प्रदर्शन नहीं है, शब्द भण्डार नहीं है, बल्कि हृदय का उद्गार है। वे अपनी कविताओं में राजनीति में फैली हुई बुराईयों की बाते करते हैं। इस प्रकार कवि की सोच का संसार बहुत व्यापक और विस्तृत है।

संदर्भ सूची

1. ललित कार्तिकेय से संवाद मेरे साक्षातकार पृष्ठ- 30
2. मंगलेश डबराल आवाज भी एक जगह है, पृष्ठ-91
3. मंगलेश डबराल, आवाज भी एक जगह है, पृष्ठ-61
4. मंगलेश डबराल, आवाज भी एक जगह है, पृष्ठ-60
5. मंगलेश डबराल, आवाज भी एक जगह है, पृष्ठ- 18-19
6. मंगलेश डबराल, आवाज भी एक जगह है, पृष्ठ-61
7. मग्लेश डबराल, घर का रास्ता, पृष्ठ-15
8. मग्लेश डबराल, घर का रास्ता, पृष्ठ-25
9. मंगलेश डबराल से ओम निश्चल की बातचीत साक्षात्कार
10. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, मेरे सपनों का भारत पृष्ठ-220
11. मंगलेश डबराल हम जो देखते हैं, पृष्ठ-13
12. मंगलेश डबराल घर का रास्ता, पृष्ठ-75
13. मंगलेश डबराल पहाड़ पर लालटेन, पृष्ठ-33
14. मंगलेश डबराल, पहाड़ पर लालटेन, पृष्ठ-64
15. मंगलेश डबराल, पहाड़ पर लालटेन, पृष्ठ-47